अब कहाँ दूसरे के दुख से दुखी होने वाले

लेखक परिचय: निदा फ़ाज़ली

निदा फ़ाज़ली का जन्म 12 अक्टूबर 1938 में दिल्ली में हुआ था। आपका बचपन ग्वालियर में बीता। आप साठोत्तरी पीढ़ी के उर्दू के महत्वपूर्ण कवि माने जाते हैं। आम बोलचाल की भाषा में अपनी कविता के माध्यम से आप दूसरों के दिलों दिमाग पर राज करते हैं। आपने अपनी रचनाओं को गद्यमें पिरो कर गागर में सागर भरा है।

निदा फ़ाज़ली की लफ्ज़ों का पुल नामक कविता की पहली पुस्तक है। खोया हुआ सा कुछ शायरी की पुस्तक के लिए 1999 में आप को साहित्य अकादमी का पुरस्कार मिला।

पाठ का सार

जीवों से प्रेम करने वाला सुलेमान: सुलेमान ईसा से 1025 वर्ष पूर्व एक बादशाह थे। वह केवल मनुष्योंके ही नहीं, जीव-जंतुओं के भी राजा थे। वह जीव-जंतुओं की भाषा जानते थे। एक बार सुलेमान अपनी सेना के साथ जा रहा था। चीटियों ने घोड़ों की टाप सुनी, तो कहने लगीं-फौजआरही है, अपने बिलों में चलो। सुलेमान ने उनकी बात सुनी और अपनी सेना को थोड़ी दूर रोक दिया और चींटियों से बोला-खुदा ने सुलेमान को सब का रखवाला बनाया है। मैं किसी के लिए मुसीबत नहीं हूँ, सबके लिए मोहब्बत हूँ। चीटियों ने सुलेमान के लिए ईश्वर से दुआ मांगी।

शेख अयाज़ के पिता: शेख अयाज़के पिता एक बार कुएँपर नहाने गए। घर आकर जब वह भोजन करने बैठे तो उन्होंने देखा कि एक चींटा उनकी बाजू पर रेँग रहा था। वे तुरंत उठ गए। जब उनसे पूछा गया कि कहाँ जा रहे हो,तो वह बोले कि एक बेघर को घर छोड़ने जा रहा हूँ।

नूहका दुख: बाइबिल में नूहपैगंबर का जिक्र है। नूहका असली नाम लश्कर था। एक बारनूहने एक घायल कुत्ते कोदुत्कारतेहुए कहा-दूर होजा गंदे कुत्ते।नूह की बात को सुनकर कुत्ते ने कहा-न मैं अपनी मर्जी से कुत्ता हूँ,न तुम अपनी पसंद से इंसान हो। सब को बनाने वाला एक है।

मट्टी से मट्टी मिले,

खो के सभी निशान।

किसमें कितना कौन है,

कैसे हो पहचान।

कुत्ते की बात को सुनकर नूह बहुत दुखी हुआ और वह सारी जिंदगी रोता रहा।

वातावरण का बढ़ता प्रदूषण: पृथ्वी कैसे वजूद में आई, बात यह महत्वपूर्ण नहीं। महत्व इस बात का है कि यह पृथ्वी मानव, पशु, पक्षी, पर्वत, समंदर आदि सब की है। पहले बड़े-बड़े दलानों में सब मिलकर रहते थे। आबादी बढ़ने के साथ लोग छोटे-छोटे डिब्बे जैसे घरों में रहने लगे हैं। बढ़ती आबादी के कारण मनुष्य को पीछे खिसकानाशुरू कर दिया। पेड़ पौधों को काटना शुरू कर दिया, जिससे प्रदूषण बढ़ने लगा है। परिणाम स्वरुप गर्मी में ज्यादा गर्मी, बेवक्त की बरसातें, जलजले, सैलाब, तूफानआदिआने लगे हैं, नए-नए रोग होने लगे हैं, मानव व प्रकृति का संतुलन बिगड़ने लगा है।

प्रकृति का गुस्सा: जब प्रकृति को अधिक नुकसान पहुँचाया जाए, तो प्रकृति अपना गुस्सा प्रकट करती है। कुछ समय पहले मुंबई में कुछ बिल्डरों ने समंदर की जमीन पाट कर वहाँ बिल्डिंग बनानी शुरू कर दी।समुंद्र ने पहलेअपनी टाँगें

समेटी, फिर सिमट कर बैठ गया, फिरउकड़ू बैठ गया तथा अंत में खड़ा हो गया। जब खड़े रहने की जगह भी कम हो गई, तो प्रकृति को गुस्सा आ गया। कहा जाता है जो जितना बड़ा होता है उसे उतना कम गुस्सा आता है। परंतु जब गुस्सा आता है तो उसे रोकना मुश्किल हो जाता है। ऐसा ही कुछ समुंद्र ने किया। जब उसे गुस्सा आया,तब एक रात समुंद्र की लहरों पर दौड़ने वाले तीन जहाजों को उठाकर उसनेतीन दिशाओं में फेंक दिया। एक वर्ली के समंदर के किनारे पर आकर गिरा, दूसरा बांद्रा में कार्टर रोड परऔर तीसरा गेटवे ऑफ इंडिया पर।

लेखक की माँ की माफी की प्रार्थना: लेखक का ग्वालियर में एक मकान था। उस मकान की दालान में दो रोशनदान थे। उनमें कबूतर के एक जोड़े ने घोसला बनाया तथा दो अंडे दिए। एक अंडा बिल्ली ने तोड़ दिया। लेखक की माँ ने दूसरे अंडे को बचाने की कोशिश की, लेकिन इस कोशिश में दूसरा अंडा भी टूट गया। इससे कबूतर दुखी हो गए और माँ को भी बहुत दुख हुआ।माँने अपने पाप की माफी के लिए रोजा रखा तथा बार-बार नमाज़ पढ़ कर अपनी गलती के लिए माफ़ी माँगी।

मुंबई में लेखक का घर:लेखक मुंबई के वर्सोवा में रहते हैं। पहले यहाँजंगल था। कई पशु पक्षी यहाँरहते थे। अब जंगल को काटकर समुद्र के किनारे लंबी चौड़ी बस्ती है। इससे कई पशु पक्षी बेघर हो गए। कुछ ने इधर उधर डेरा डाल लिया। इनमें से दो कबूतरों ने लेखक के घर की मचान पर घोंसला बनाया। छोटे बच्चों को खाना खिलाने के लिए कबूतर बार-बार घर में आते, जिससे घर का सामान टूटता और पुस्तकालय की पुस्तकें खराब होती। इस पर तंग आकर लेखक की पत्नी ने बच्चों को दूसरी जगह रखवा दिया तथा जहाँ कबूतरों का घोंसला था,वहाँ जाली लगवा दी और खिड़की को बंद कर दिया। क्योंकि अब न तो सुलेमान जैसे लोग हैं और नलेखक की माँ जैसे।

प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1) बड़े बड़े बिल्डर समुद्र को पीछे क्यों धकेल रहे थे?

उत्तर:बड़े बड़े बिल्डर इमारतें बनाने के लिए समुद्र को पीछे धकेल रहे थे।

प्रश्न 2)लेखक का घर किस शहर में था?

उत्तर: लेखक का घर ग्वालियर शहर में था।

प्रश्न 3)जीवन कैसे घरों मेंसिमटने लगा है?

उत्तरः जीवन छोटे-छोटे डिब्बे जैसे घरों मेंसिमटनेलगा है।

प्रश्न 4)कबूतर परेशानी में इधर-उधर क्यों फड़फड़ा रहे थे?

उत्तर: कबूतरों का एक अंडा बिल्ली ने तोड़ दिया था। दूसरे अंडे को लेखक की माँ सुरक्षित करना चाहती थी और इसी प्रयास में दूसरा अंडा भी टूट गया। इसीलिए कबूतर परेशानी में इधर-उधर फड़फड़ा रहे थे।

प्रश्न 5)अरब में लश्कर को नूह के नाम से क्यों याद करते हैं?

उत्तर: लश्कर नाम के पैगंबर ने एक बार एक जख्मी कुत्ते को कहा-दूर हो जा गंदे कुत्ते, क्योंकि इस्लाम में कुत्ते को गंदा समझा जाता है।लश्करकी बात सुनकर कुत्ते ने कहा-न मैं अपनी मर्जी से कुत्ता हूँ,न तुम अपनी मर्जी से इंसान। हम सब को ईश्वर ने बनाया है।कुत्ते की बात सुनकर लश्कर को अपनी गलती का एहसास हुआ और वह रोने लगा तथा सारी उम्र रोता रहा। इसीलिए उसेनूहकह कर याद किया जाता है।

प्रश्न 6)लेखक की माँकिस समय पेड़ों के पत्ते तोड़ने के लिए मना करती थी और क्यों?

उत्तरः लेखक की माँ का कहना थाकि दीया बातीके समय फूल मत तोड़ो, फूल बद्दुआ देते हैं तथा सूरज ढलने के बाद पेड़ के पत्ते मत तोड़ो, पेड़ रोएँगे।

प्रश्न 7)प्रकृति में आए असंतुलन का क्या परिणाम हुआ?

उत्तर:प्रकृतिको नुकसान पहुँचाने के कारण प्रकृति में असंतुलन उत्पन्न हो गया है। गर्मी में ज्यादा गर्मी, बेवक्त की बरसातें, जलजले, सैलाब, तूफान आदि तथा नितनए रोग प्रकृति में आए असंतुलन का परिणाम हैं।

प्रश्न 8)लेखक की माँ ने पूरे दिन का रोजा क्यों रखा?

उत्तर: लेखक के ग्वालियर वाले घर के दालान में दो रोशनदान थे। वहाँकबूतरों के जोड़े ने दो अंडे दिए। एक अंडा बिल्ली ने तोड़ दिया तथा दूसरे अंडे को बचाने की कोशिश में लेखक की माँ से अंडा टूट गया। अपने इस गुनाह की माफी के लिए माँ ने पूरे दिन का रोजा रखा तथा बार-बार नमाज़ पढ़ कर अपनी गलती को मुआफ़ करने की दुआ माँगतीरही।

प्रश्न9)लेखक ने ग्वालियर से मुंबई तक किन बदलावों को महसूस किया? पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: ग्वालियर में लेखक की माँ थी, जो जीवोंसे प्रेम करती थी। उससे कबूतरों का अंडा टूट जाने पर वह पूरे दिन का रोजा रखती थी, नमाज पढ़ कर अपने गुनाहों की माफी मांगती थी। मुंबई में वर्सोवा केजंगलोंको काटकर इमारतें बनाई गई।जहाँलेखक अपनी पत्नी के साथ रहता था, वहाँ कबूतरों ने लेखक के घर में घोंसला बनाया। कबूतर बार-बार घर के अंदर आते। लेखक की पत्नी को यह अच्छा नहीं लगा। उसने कबूतरों का घोंसला हटा दिया तथा वहाँजाली लगा दी और वह खिड़की बंद कर दी, जिससे कबूतर घर में आते थे। ग्वालियर में जीवों से प्रेम करने वाली माँथी, पर मुंबई में ऐसा नहीं था।

प्रश्न 10)डेरा डालने से आप क्या समझते हैं?स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: जब मुंबई मेंवर्सोवा के जंगल को काटकर वहाँइमारतें बना दी गई, तब वहाँ रहने वाले पशु-पक्षियों से उनका घर छिनगया। इनमें से कुछ शहर छोड़

कर चले गए और जो नहीं जा सके, उन्होंने यहाँ-वहाँ शहर में ही डेरा डाल दिया,अर्थात् रहने लगे।

प्रश्न 11)शेख अयाज़के पिता अपने बाजू पर काला च्योंटारेंगतादेख भोजन छोड़कर क्यों उठ खड़े हुए?

उत्तर:शेखअयाज़के पिता एक बार कुएँ पर नहाने गए। घर आकर जब वह भोजन करने बैठे तो अपने बाजू पर रेंगतेच्योंटेको देखकर वेभोजन छोड़ कर उठ खड़े हुए, क्योंकि वहच्योंटा, जो उनकी बाजू पर रेंग रहा था, अपने घर से बेघर हो गया था।वे उसे उसके घर वापस छोड़ने कुएँ पर गए।

प्रश्न 12)बढ़ीहुई आबादी का पर्यावरण पर क्या प्रभाव पड़ा?

उत्तर: बढ़ी हुई आबादी के कारण पर्यावरण प्रदूषित हो रहा है। पहले पृथ्वी पर काफी जंगल थे, जहाँ अनेक पशु पक्षी रहते थे तथा पर्यावरण शुद्ध था। जैसे-जैसे आबादी बढ़ रही है, वैसे-वैसे जंगल कट रहेहैं। पशु पक्षी बेघर हो रहे हैं। इनकी कुछ प्रजातियाँनष्ट हो रही हैं तथा पर्यावरण का संतुलन बिगड़ रहा है। इस कारण असमय की बरसातें, तूफान, जलजले, सैलाब आ रहे हैं, गर्मी में अधिक गर्मी पड़ रही है और नई-नई बीमारियाँबढ़ रही हैं।

प्रश्न13) लेखक की पत्नी को खिड़की में जाली क्यों लगानी पड़ी?

उत्तर:लेखक के फ्लैट के मचान पर कबूतरों ने एक घोंसला बनाया तथा कबूतर बच्चों को खाना खिलाने के लिए बार-बार घर में आते, जिससे कभी कोई चीज गिर के टूट जाती, तो कभी पुस्तकालय की पुस्तकें गंदी हो जाती। रोज-रोज की परेशानी से तंग आकर लेखक की पत्नी ने खिड़की में जाली लगा दी, जिससे कबूतर घर में ना आ सके।

प्रश्न 14)समुद्र के गुस्से की क्या वजह थी? उसने अपना गुस्सा कैसे निकाला?

उत्तर:मुंबई में बिल्डर्ससमुद्रको पीछे धकेल कर उसकी जमीन हथिया रहे थे। समुद्र लगातार सिमट रहा था। समुद्र नेपहले अपनी फैली टाँगें समेटी, फिर

सिमट कर बैठ गया, फिरस्थानकमपड़ातोउकड़ू बैठ गया, फिर खड़ा हो गया। खड़े रहने की जगह कम पड़ गई, तो उसे गुस्सा आ गया।एक दिन रात में समुद्र की लहरों पर दौड़ने वाले तीन जहाजों को उसने उठाकरतीन दिशाओं में पटक दिया। एक वर्ली के समुद्र तट पर गिरा, दूसरा बांद्रा के कार्टर रोड पर तथा तीसरा गेटवे ऑफ इंडिया पर। ये जहाज फिर कभी चलने-फिरने लायक नहीं हो सके।

प्रश्न15)मट्टी से मट्टी मिले

खो कर सभी निशान।

किस में कितना कौन है,

कैसे हो पहचान।

इन पंक्तियों के माध्यम से लेखक क्या कहना चाहते हैं?

उत्तरः लेखक का कहना है किईश्वर ने सभी जीवों को पाँच तत्वों से बनाया है।ये तत्व हैं- आकाश, पानी, अग्नि, हवा व मिट्टी। मृत्यु के बाद येजीव वापस इन्हीं तत्वों में मिल जाते हैं। उपरोक्त पंक्तियों के माध्यम से कवि कहना चाहते हैं कि मृत्यु के बाद सभी जीव मिट्टी में मिल जाते हैं। इसके बाद पता नहीं लगताकि कौन सी मिट्टी किस जीव की है।

प्रश्न16) नेचर की सहनशक्ति की एक सीमा होती है। नेचर के गुस्से का एक नमूना कुछ साल पहले मुंबई में देखने को मिला था। आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:नेचर (प्रकृति) की सहनशक्ति कीएक सीमा होती है। परंतु जब उसकी सहन शक्ति समाप्त हो गई, तब समुद्र ने अपना गुस्सा दिखाया। मुंबई के बिल्डर जब समुद्र को पीछे धकेल कर वहाँ इमारतें बनाने लगे, तब पहले तो समुद्र पीछे हटता गया। परंतु जब समुद्र को अपने लिए जगह कम हो गई, तब उसे गुस्सा आ गया।एकदिन रात में समुद्र की लहरों पर दौड़ने वाले तीन जहाजों को उसने उठाकर तीन दिशाओं में फेंक दिया। एक जहाज वर्ली के समुद्र तट पर गिरा,

दूसरा बांद्रा के कार्टर रोड पर औरतीसरा गेटवे ऑफ इंडिया पर आकर गिरा और सब जहाज टूट फूट गए और कभी चलने लायक नहीं बने।

प्रश्न 17) जो जितना बड़ा होता है, उसे उतना ही कम गुस्सा आता है। आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:यह सत्य है किजो जितना बड़ा होता है वह उतना ही सहनशील होता है, इसलिए उसे कम गुस्सा आता है। परंतु जब उसे गुस्सा आता है तो बहुत तेज आता है। जैसे जब मुंबई के बिल्डरों ने समुद्र की जमीन हथियाकर वहाँइमारतें बनानी शुरू की, तो शुरू में तो समुद्र सहन करता गया। परंतु जब उसकी सहनशक्ति जवाब दे गई, तो उसे गुस्सा आ गया। परिणाम स्वरूप उसने समुद्र की लहरों पर दौड़ने वाले तीन जहाजों को उठाकर तीन दिशाओं में पटक दिया।ये जहाज फिर किसी काम के नहीं रहे।

प्रश्न 18)"इस बस्ती नेनजाने कितने परिंदों-चरिंदों से उनका घर छीन लिया है। इनमें से कुछ शहर छोड़कर चले गए हैं। जो नहीं जा सके हैं, उन्होंने यहाँ-वहाँ डेरा डाल लिया है।" आशय स्पष्ट करें।

उत्तर:वर्सोवा, जहाँ आज लेखक का घर है,वहाँ पहले जंगल था।वहाँ अनेक परिंदे-चरिंदे रहते थे। जब जंगल काट कर वहाँ इमारतें बना दी गई,तब अनेक पशु-पक्षीबस्तीछोड़कर कहीं चले गए।परंतु जो नहीं गए, उन्होंने वहींयहाँ-वहाँ अपना डेरा डाल लिया।जैसे- दो कबूतरों ने लेखक के घर में अपना घोंसला बना लिया।

प्रश्न 19)शेख अयाज़के पिता बोले-"नहीं, यह बात नहीं है। मैंने एक घर वाले को बेघर कर दिया है।उसेकुएँ पर उसके घर छोड़ने जा रहा हूँ।" इन पंक्तियों में छिपी उनकी भावना को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: शेख अयाज़के पिता एक बार कुएँ पर नहाने गए। वहाँ से उनके साथ एक च्योंटाआ गया। खाना खाते समय जब उन्होंनेच्योंटेको अपने बाजू पर रेंगते देखा, तो वह खाना छोड़ कर उठ खड़े हुए और बोलने लगे-"उन्होंने इस च्योंटेको बेघर

कर दिया है। इसे अपनों से दूर कर दिया है। इसे इसके घरकुएँपर छोड़ कर आता हूँ।"इन पंक्तियों से स्पष्ट होता है कि शेख अयाज़के पिता सभी जीवोंसे प्रेम करने वाले व्यक्ति थे तथा उनका हृदय करुणावदया के भाव से परिपूर्ण था।

प्रश्न 20)"अब कहाँ दूसरे के दुख से दुखी होने वाले" पाठ में निहित उद्देश्य को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: इस पाठ का उद्देश्य हैकि यदि पर्यावरण को शुद्ध रखना है तो हमें इस पृथ्वी पर रहने वाले प्रत्येक जीव-जंतु से प्रेम करना चाहिए, क्योंकि यह पृथ्वी ईश्वर ने प्रत्येक जीव-जंतु के लिए बनाई है।

पर्यावरण के संतुलन को बनाए रखने के लिए प्रत्येक जीव-जंतु एवं प्रकृति के प्रत्येक तत्व की आवश्यकता है।

प्रश्न 21)न मैं अपनी मर्जी से कुत्ता हूँ,न तुम अपनी मर्जी से इंसान हो कथन का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:धर्म शास्त्रों के अनुसार सभी जीवों को बनाने वाला ईश्वर है। व्यक्ति के पिछले जन्म के कर्मों के अनुसार उसे शरीर मिलता है। कोई कुत्ता बनता है, कोई इंसान तो कोई अन्य जीव। उपरोक्त पंक्तियों द्वारा यही कहा गया है।

प्रश्न 22) सुलेमान, शेख अयाज़के पिता तथा नूहके स्वभाव कीउन विशेषताओं का उल्लेख कीजिए, जो उन्हें आज के मनुष्यों से अलग करती हैं?

उत्तर:सुलेमान केवल मनुष्यों के ही नहीं, बल्कि सभी जीव-जंतुओं के बादशाह थे। इसीलिए वे चींटियोंकी घबराहट देखकर उन्हें सुरक्षा देते हैं।शेखअयाज़के पिता एकच्योंटे को बेघर हुआ देखकर उसे उसके घर तक छोड़ने जाते हैं। एक कुत्ते के यह कहने पर-मैं गंदा कुत्ता हूँ, पर न तो मैं अपनी मर्जी से कुत्ता बना हूँऔर नतुम अपनी मर्जी से इंसान होनूहको अपनी गलती पता चलती है और वह सारी जिंदगी रोता रहता है।

अर्थात् सुलेमान, शेख अयाज़के पितावनूहजीवोंसे प्रेम करने वाले लोग थे। परंतु आज ऐसे लोग नहीं है।आज तो लेखक की पत्नी जैसे, मुंबई के बिल्डर जैसे लोग हैं, जो केवल अपना हित व स्वार्थ देखते हैं।

प्रश्न 23) पाठ के आधार पर प्रतिपादित कीजिए कि दूसरों के दुख से दुखी होने वाले लोग अब कम मिलते हैं।

उत्तर: यह सत्य है आज दूसरों के दुख से दुखी होने वाले लोग कम हो गए हैं। इसीलिए प्रकृति का संतुलन बिगड़ रहा है। लोग इमारतें बनाने के लिए जंगल काट रहे हैं, समुद्र पाटरहे हैं, जिससे कई जीव-जंतु अपने घर छोड़कर दूसरे स्थानों पर जा रहे हैं।जीव-जंतुओं की कई प्रजातियाँ नष्ट हो गई हैं। कुछ जीव इधर-उधर डेरा डाल रहेहैं। जैसे कबूतरों ने लेखक के वर्सोवावाले घर में डेरा डाला, परंतु लेखक की पत्नी को यह अच्छा नहीं लगता और वह उनके आने जाने का रास्ता बंद कर देती है। वास्तव में ही अब दूसरों के दुख से दुखी होने वाले लोग कम हो गए हैं।

प्रश्न 24) कैसे कह सकते हैं किपाठ के लेखक की माँ केमन में पशु-पक्षियों के प्रति प्रेम भरा है?

उत्तर:जब लेखक के ग्वालियर वाले घर के रोशनदान में कबूतर अंडे देते हैं, तब एक अंडा बिल्ली तोड़ देती है। इस पर लेखक की माँ दूसरे अंडे को बचाना चाहती है। परंतु दूसरा गलती से उस से टूट जाता है। इस पर माँदुखी हो जाती है औरअपनी गलती की माफी माँगने के लिए रोजा रखती है तथा नमाज पढ़ती है तथा ईश्वर से बार-बार माफी माँगती है, जोसिद्ध करता है कि उसका ह्रदय पशु-पक्षियों के प्रति प्रेम से भरा है।

प्रश्न 25)लेखक के घर में खिड़की के बाहर दोनों कबूतर उदास क्यों बैठे रहते थे?

उत्तरः लेखक के घर की मचान पर कबूतरों ने घोंसला बना लिया था। बच्चों को खाना खिलाने के लिए कबूतर बार-बार घर में आते थे, इससे घर वालों को परेशानी हो रही थी। इसलिए लेखक की पत्नी ने मचान पर जाली लगवा दी व खिड़की बंद कर दी। इसीलिए दोनों कबूतर उदास खिड़की के बाहर बैठे रहते थे।

*****

VASUNDHARAHINDI.COM